ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०१ -

ॐ कपीन्द्राय नमः

वानरादि के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute Ramji, the Master of Monkey's.

कपीनां वानराणाम् इन्द्रः कपीन्द्रः राघवो वा अर्थात् वे कपियों, वानरादि के स्वामी श्री रघुनाथजी ही कपीन्द्र हैं। परमात्मा स्वयं धर्म की रक्षा हेतु अधर्म का नाश करने के लिए प्रत्येक युग में अवतरित होते हैं। त्रेतायुग में वे ही भगवान श्रीराम के रूप में अवतरित हुए थे और वानरो को संचालित कर उनकी सहायता से अधर्म के प्रतीकरूप रावण तथा अन्य असुरों का विनाश किया था। अतः वे कपीन्द्र कहलाएं। उन वानरादि के स्वामी भगवान श्रीराम को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०२ -

ॐ भूरिदक्षिणाय नमः

बहुत दक्षिणा देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Magnificent Gifts.

भूरयः बह्वयः यज्ञदक्षिणाः धर्ममर्यादां दर्शयतो यज्ञं कुर्वतो विद्यन्ते इति भूरिदक्षिणः अर्थात् धर्ममर्यादा दिखाते हुए यज्ञानुष्ठान करते समय भगवान् की बहुत सी दक्षिणाएं रहती हैं, इसलिए वे भूरिदक्षिण हैं। भगवान अवतरित होकर वेद प्रतिपादित यज्ञकार्य सम्पन्न करके ऋत्विज आदि को यज्ञ के नियम अनुसार बहुत सी दक्षिणाएं देते हैं। इस प्रकार वेदों की तथा धर्म की मर्यादा की रक्षा करते हैं। अतः वे भूरिदक्षिण कहलाते हैं। उन भूरिदक्षिण परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०३ -

ॐ सोमपाय नमः

सोमरस पान करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Partaker of Soma Juice.

सोमं पिबति सर्वयज्ञेषु यष्टव्यः देवतारूपेण इति सोमपः अर्थात् समस्त यज्ञों में यष्टव्य अर्थात् पूजनीय देवतारूप से सोमपान करते हैं, इसलिए सोमप हैं। जब यजमान समस्त विधि-विधान से यज्ञ सम्पन्न करता है, तो परमात्मा स्वयं देवता रूप से उनके द्वारा प्रदत्त सोम रूपा आहुति को ग्रहण करते हैं, और मानों उसका पान करते हैं। अतः वे सोमप कहलाते हैं।

उन सोमपान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०४ -

ॐ अमृतपाय नमः

अमृतरस का पान करनेवाले प्रभु को नमन।

I salute the one who is Enjoyer of Ambrosia.

स्वात्मामृतरसं पिबन् अमृतपः अर्थात् अपनी आत्मारूप अमृतरस का पान करने के कारण अमृतप हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं। वे अपने आपमें अपने आपसे संतुष्ट हैं, अतः आनन्द के लिए किसी अन्य पर आश्रित नहीं हैं। वे स्वयं अपने आप में आत्मरूप अमृतरस का मानों पान करते हैं, अतः वे अमृतप हैं। उन स्वात्मरूप अमृतरस का पान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५०५ –

ॐ सोमाय नमः

चन्द्रमा रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is in the form of Moon.

सोमरूपेण औषधीः पोषयन् सोमः अर्थात् चन्द्रमा रूप से ओषधियों का पोषण करने के कारण सोम हैं। परमात्मा स्वयं ही अपनी मायाशक्ति से समस्त जगत की तरह अभिव्यक्त हुए हैं। चन्द्रमा जो अपने अमृत की वर्षा करने के द्वारा ओषधियों का पोषण करता हैं, उस चन्द्रमा की तरह से भी परमात्मा ही स्थित हैं।

उन चन्द्रमा रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०६ -

ॐ पुरुजिते नमः

बहुतों को जीतनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who won over numerous.

पुरून् बहून जयति इति पुरुजित्, पुरु अर्थात् बहुतों को जीतते हैं, इसलिए पुरुजित् हैं। भगवान अपने प्रेम और करुणा की वर्षा करते हुए अनेकों भक्तों के हृदय को जीत लेते हैं। इतना ही नहीं, अपने बल और पौरुष से उन शत्रुओं को भी जीत लेते हैं, जो अधर्मगामी होते हुए सृष्टि के संचालन में व्यवधान उत्पन्न करते हैं।

उन बहुतों को जीतनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५०७ –

ॐ पुरुसत्तमाय नमः

सर्वोत्कृष्ट परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Greatest.

विश्वरूपत्वात् पुरुः, उत्कृष्टत्वात् सत्तमः, पुरश्चासौ सत्तमश्च इति पुरुसत्तमः अर्थात् विश्वरूप होने से पुरु हैं और उत्कृष्ट होने के कारण सत्तम हैं। पुरु हैं और सत्तम हैं इसलिए पुरुसत्तम हैं। परमात्मा स्वयं इस विश्वरूप से प्रकट हैं, अतः जगत में जो कुछ भी उत्कृष्ट है, उन सबकी तरह वे ही प्रकट है। उत्कृष्ट को अभिव्यक्त करनेवाला उनसे भी श्रेष्ठ होना चाहिए। अतः परमात्मा पुरुसत्तम हैं। उन सर्वोत्कृष्ट परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०८ -

ॐ विनयाय नमः

दुष्टों को दण्डित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Punishes the Evil.

विनयं दण्डं करोति दुष्टानां इति विनयः अर्थात् दुष्टों को विनय अर्थात् दण्ड देते हैं, इसलिए विनय हैं। परमात्मा सृष्टि की सुचारु रूप से व्यवस्था बनाए रखने हेतु उसमें व्यवधान उत्पन्न करने वाले अधर्मियों को विनय अर्थात् दण्ड देते हैं, इसलिए वे विनय कहलाते हैं।

उन दुष्टों को दण्डित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५०९ -

ॐ जयाय नमः

समस्त भूतों पर विजयी को नमस्कार।

I salute the Master of all Elements.

समस्तानि भूतानि जयति इति जयः अर्थात् सभी भूतों को जीतते हैं, इसलिए जय हैं। परमात्मा से ही समस्त भूत जगत की अभिव्यक्ति हुई है। वे उनकी उत्पत्ति करने में भी स्वतंत्र हैं, तथा उसका प्रलय भी करने में स्वतंत्र हैं। वे स्वेच्छा से पंचभूतों की बनी हुई उपाधि को धारण करके अवतार भी ग्रहण कर सकते हैं। इस प्रकार सभी भूतों पर उनका नियन्त्रण है, इसलिए वे जय कहे जाते हैं।

उन समस्त भूतों पर जय को प्राप्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५१० -

ॐ सत्यसंघाय नमः

सत्यसंकल्प परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Truthful Resolve.

सत्या सन्धा संकल्पः अस्य इति सत्यसन्धः अर्थात् जिन भगवान की सन्धा अर्थात् संकल्प सत्य है, वे सत्यसंकल्प अर्थात् सत्यसन्ध हैं। जो अपने आपमें संतुष्ट तथा अपनी पूर्णस्वरूपता के ज्ञान से युक्त है, उनमें स्वार्थ का अत्यन्त अभाव होने से उनके द्वारा जो भी संकल्प होता है, वह समष्टि कल्याण हेतु ही होता है। वह संकल्प कभी भी विफल नहीं होता है। परमात्मा पूर्णस्वरूप, अपने आपमें संतुष्ट होने से उनका संकल्प सत्यसंकल्प है। उन सत्यसंकल्प परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५११ –

ॐ दाशार्हाय नमः

दशार्ह कुलोत्पन्न परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one born in Dasharh family

दशार्ह कुल उद्भवत्वाद् इति दाशार्हः अर्थात् दशार्हकुल में उत्पन्न होने के कारण दाशार्ह हैं। दाशार्ह भगवान कृष्ण का नाम है। उनका जन्म दशार्ह कुल में हुआ था, इसलिए वे दाशार्ह नाम से भी जाने जाते हैं।

उन दशार्ह कुल में उत्पन्न परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५१२ -

ॐ सात्वतां पतये नमः

सात्वतों के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of Sattvat.

सात्वतं नाम तन्त्रम्, तत्करोति तदाचष्टे सात्वत्, तेषां पतिः योगक्षेमकर इति सात्वतां पतिः अर्थात् सात्वत नामका एक तन्त्र है, जो उसे रचता है उन सात्वतों के पति अर्थात् योगक्षेम करनेवाले हैं। सात्वत् एक तंत्रशास्त्र का नाम है, जिसमें भगवान विष्णु की उपासना बताई गई है। उसका अनुसरण करनेवाले भगवान विष्णु के भक्त होते है। जो भगवान के प्रति समर्पित है, ऐसे भक्तों की आवश्यकताओं की पूर्ति भगवान अवश्य करते हैं। इसलिए वे सात्वतांपति नाम से जाने जाते हैं। उन सात्वतों के स्वामी को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५१३ -

ॐ जीवाय नमः

जीव रूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Embodied Limited Ego.

प्राणान् क्षेत्ररूपेण धारयन् जीवः उच्यते अर्थात् क्षेत्रज्ञरूप से प्राण धारण करने के कारण जीव कहे जाते हैं। परमात्मा सभी शरीर रूपी क्षेत्र में क्षेत्रज्ञ नाम से ज्ञात जीव रूप से वास करते हैं। वे जीव रूप से शरीर के अन्तर्गत स्थित रहकर प्राण को टिकाएं रखते हैं। इस प्रकार परमात्मा ही जीव रूप से अभिव्यक्त हुए हैं।

उन सभी शरीरों में जीव रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१४ –

ॐ विनयितासाक्षिणे नमः

हृदय के भावों के साक्षीरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Witness of Modesty.

विनयित्वं विनयिता, तां च साक्षात् पश्यति प्रजानां इति विनयितासाक्षी अर्थात् विनयिता विनयित्व को कहते हैं। प्रजा की विनयिता को साक्षात् देखते हैं, इसलिए विनयितासाक्षी हैं। ईश्वर सब के हृदय में साक्षी की तरह से स्थित है। वे हृदय के समस्त भावों को साक्षी बनकर जानते हैं। उन समस्त भावों में विनय अर्थात् विनम्रता, शरणागति को भी वे साक्षात् देखते हैं, अतः जीव को उनकी शरणागति का प्रसाद प्राप्त होता है। इसलिए परमात्मा विनयितासाक्षी है। उन हृदय के भावों के साक्षीरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१५ –

ॐ मुकुन्दाय नमः

मुक्तिदाता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conferer of Liberation.

मुक्तिं ददाति इति मुकुन्दः अर्थात् मुक्ति देते हैं, इसलिए मुकुन्द हैं। हर जीव संसार के बन्धनों से मुक्ति का अभिलाषी होता है। अपने अज्ञानवशात् ही स्वयं को बन्धन में समझ कर दुःखी व संतप्त होता है। परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करके वह अज्ञान को नष्ट करता है, तब उसे हृदयस्थ, आत्मस्वरूप परमात्मा की प्राप्ति हो जाती है और वह समस्त बन्धनों से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की प्राप्ति ही मानों जीव को बन्धन से मुक्त करती है। उन मुक्तिप्रदाता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१६ –

ॐ अमितविक्रमाय नमः

अमित पाद वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is of Immeasurable Stride.

अमिता अपरिच्छिन्ना विक्रमास्त्रयः पादविक्षेपा अस्य अमितविक्रमः अर्थात् भगवान के विक्रम अर्थात् तीन पादविक्षेप अमित यानी अपरिच्छिन्न हैं इसलिए वे अमितविक्रम हैं। भगवान ने वामन अवतार लेकर राजा बलि का अभिमान भंग करने हेतु उनसे तीन कदम भूमि मांगी थी, और उन तीन कदमों में तीनों लोकों का नाप लिया था। इतने असीम पादविक्षेप वाले प्रभु अमितविक्रम कहलाए।

उन अमितविक्रम स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१७ –

ॐ अम्भोनिधये नमः

देवताओं के अधिष्ठान परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Substratum of Deities.

अम्भांसि देवादयो अस्मिन् निधीयन्ते इति अम्भोनिधिः, 'तानि वा एतानि चत्वारि अम्भांसि। देवा मनुष्याः पितरो असुराः' इति श्रुतेः अर्थात् अम्भ यानि देवता आदि भगवान् में रहते हैं, इसलिए वे अम्भोनिधि हैं। श्रुति कहती है, 'वे ये चार – देवता, मनुष्य, पितर और असुर उनमें ही रहते हैं।' इस प्रकार सभी देवतादि के अधिष्ठान परमात्मा ही हैं। परमात्मा से ही सब उत्पन्न होते है, उनमें ही स्थित है तथा उनमें ही लय को प्राप्त होते है। इसलिए वे अम्भोनिधि कहलाते हैं। उन देवताओं के अधिष्ठान परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१८ –

ॐ अनन्तात्मने नमः

अनन्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Infinite.

देशतः कालतः वस्तुतश्च अपरिच्छिन्नत्वात् अनन्तात्मा अर्थात् देश, काल, वस्तु से अपरिच्छिन्न होने के कारण भगवान अनन्तात्मा हैं। जो भी उत्पन्न होता है, वह देश, काल और वस्तुत्व की सीमा से युक्त होता है। किन्तु परमात्मा की न उत्पत्ति होती है, जिससे वे काल से बद्ध हो सके तथा न उनसे पृथक् कुछ भी देशादि का अस्तित्व है, जो उसे सीमित कर सके। अतः वे अनन्तात्मा हैं। उन अनन्तस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५१९ –

ॐ महोदधिशयाय नमः

समुद्र में शयन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Rests in the Milky Ocean.

संहृत्य सर्वभूतानि एकार्णवं जगत् कृत्वा अधिशेते महोदधिं इति महोदधिशयः अर्थात् समस्त भूतों का संहार कर सम्पूर्ण जगत को जलमय करके महोदधि में शयन करते हैं, इसलिए महोदधिशय हैं। पुराण के अनुसार भगवान जब सृष्टि का प्रलय करते हैं, तब समस्त पंचमहाभूतों को जलमय कर देते हैं, और स्वयं क्षीरसागर में वास करते हैं, इसलिए वे महोदधिशय कहलाते हैं। उन महान सागर में शयन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२० –

ॐ अन्तकाय नमः

अन्त करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Death.

अन्तं करोति भूतानामिति अन्तकः अर्थात् भूतों का अन्त करते हैं, इसलिए वे अन्तक हैं। जिस समय सृष्टि का प्रलय होता है, तब समस्त भूतों का अन्त हो जाता है, वे सब अव्यक्त में चले जाते है। उस समय परमात्मा स्वयं अपरिवर्तनीय, अन्तरहित रहते हैं। मानों परमात्मा ही सृष्टि का प्रलय करके अपने अन्दर समाहित कर लेते हैं। अतः वे अन्तक कहलाते हैं।

उन सृष्टि का अन्त करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५२१ -

ॐ अजाय नमः

परमात्मा से जन्मे को नमस्कार।

I salute the one who is born from God

आत् विष्णोः अजायत इति अजः कामः। 'अ' अर्थात् भगवान विष्णु, उनसे जो उत्पन्न होता है वह अज हैं। भगवान् कृष्ण के पुत्र के रूप में स्वयं कामदेव ने जन्म लिया, जो कि प्रद्युम्न नाम से जाने गए। इसलिए काम को 'अज' भी कहा जाता है। कामना समस्त कार्यो की उर्जा होती है, वह अत्यन्त आवश्यक और शक्तिशाली होती है। कारण ही कार्य रूप से व्यक्त होता है, अतः उन कामरूप से जन्मे परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५२२ -

ॐ महार्हाय नमः

पूजनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Worthy of Highest Veneration

महः पूजा तदर्हत्वात् महार्हः। मह पूजा को कहते हैं, जो उसके योग्य होता है वह महार्ह हैं। परमात्मा सर्वज्ञ, सर्वशक्तिमान तथा सर्वव्यापी हैं। वे ही जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहारकर्ता हैं। जगत में जो कुछ भी ज्ञान, इच्छा और क्रियाशक्ति है, उन सब के मूल स्रोत तथा उसके पूंज हैं। ऐसे परमात्मा ही पूजायोग्य हैं।

उन पूजनीय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५२३ -

ॐ स्वाभाव्याय नमः

नित्यसिद्ध परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-exist.

स्वभावेन एव आभाव्यो नित्यनिष्पन्नरूपत्वाद् इति स्वाभाव्यः अर्थात् नित्यसिद्ध होने के कारण सदैव होते है, इसलिए स्वाभाव्य हैं। परमात्मा से परे, उनके पूर्व में कुछ भी नहीं था। अतः परमात्मा की किसी से भी उत्पत्ति नहीं हुई हैं। परमात्मा का होना भी किसी भी अन्य पर आश्रित नहीं हैं। किन्तु वे स्वतः तथा नित्य सिद्ध हैं। इसलिए वे स्वाभाव्य कहलाते हैं।

उन नित्य सिद्ध परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२४ –

ॐ जितामित्राय नमः

शत्रु पर विजयी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conqueror of Enemies.

जिता अमित्रा अन्तर्वर्तिनो रागद्वेषादयो बाह्याश्च रावण–शिशुपालादयो येनासौ जितामित्रः अर्थात् जिन्होंने रागद्वेषादि आन्तरिक, और रावण आदि बाह्य अमित्र अर्थात् शत्रु जीत लिये हैं, वे भगवान जितामित्र हैं। शत्रु वह होता है, जो हमारे लक्ष्य में बाधक होता है – वह चाहे आन्तरिक शत्रु हो या बाह्य। रागादि अन्तः शत्रु ज्ञानस्वरूप परमात्मा में रह नहीं सकते, एवं रावण–कंस आदि बाह्य बाधक को भी अपने प्रेम, ज्ञान और बल से जो जीत लेते हैं, उन जितामित्र परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२५ –

ॐ प्रमोदनाय नमः

प्रमोद रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Ever-blissful.

स्वात्मामृतरसास्वादात् नित्यं प्रमोदते, ध्यायिनां ध्यानमात्रेण प्रमोदं करोति इति प्रमोदनः अर्थात् अपने आत्मारूप अमृतरस का आस्वादन करने से नित्य प्रमुदित होते हैं, तथा अपने ध्यानमात्र से ध्यानियों को प्रमुदित करते हैं, इसलिए प्रमोदन हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं, उनका आनन्द स्वस्वरूप में रमने से अपरोक्ष रूप से प्राप्त होता है। तथा उन परमात्मा का ज्ञान प्राप्त करके जो ज्ञानीजन उनमें रमते हैं, उन्हें भी वे प्रमुदित करते हैं। अतः वे प्रमोदस्वरूप हैं। उन प्रमोद रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२६ –

ॐ आनन्दाय नमः

आनन्दस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Pure Bliss.

आनन्दः स्वरूपम् अस्य इति आनन्दः, 'एतस्य एव आनन्दस्य अन्यानि भूतानि मात्रामुपजीवन्ति इति श्रुतेः अर्थात् भगवान् का स्वरूप आनन्द है, इसलिए वे आनन्द हैं। श्रुति कहती है – 'इस आनन्द की ही थोडी मात्रा का भी आश्रय लेकर अन्य प्राणी जीवित रहते हैं।' जगत में जहां कहीं भी आनन्द की अनुभूति होती है, तो वह परमात्मा के ही अंश मात्र की अभिव्यक्ति है। सभी जीव उस आनन्द की वजह से ही जीवित रहते हैं।

उन आनन्द स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५२७ -

ॐ नन्दनाय नमः

आनन्दित करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Bliss.

नन्दयति इति नन्दनः अर्थात् आनन्दित करते हैं, इसलिए नन्दन कहलाते हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं। जो भी उन आनन्दस्वरूप परमात्मा की सन्निधि का अनुभव करता है, उसे आनन्द की प्राप्ति होती है। तथा जो अपने अज्ञान को दूर करके आत्मा की तरह से परमात्मा को जान लेता है, वह स्वयं ही आनन्दस्वरूप हो जाता है। इस प्रकार उनके स्मरण, भजन, ज्ञान और विज्ञान से वे आनन्द देते हैं। उन आनन्दित करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२८ –

ॐ नन्दाय नमः

नन्दस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Contended.

सर्वाभिः उपपत्तिभिः समृद्धो नन्दः अर्थात् सब प्रकार की सिद्धियों से सम्पन्न होने से नन्द हैं। परमात्मा ही एक मात्र सत्य तत्त्व हैं, अन्य सब कुछ उनकी मायाशक्ति से उत्पन्न हुआ है। माया के द्वारा जो कुछ भी उत्पन्न हुआ है, वह सब परमात्मा के ही उन–उन शक्ति, सामर्थ्य, ज्ञानादि की अभिव्यक्तियां है। इस प्रकार परमात्मा समस्त उपलब्धियां, सिद्धियों से सम्पन्न होने से नन्द कहलाते हैं। उन नन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५२९ –

ॐ सत्यधर्मिणे नमः

सत्यधर्मा रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Supreme Dharma.

सत्या धर्मा ज्ञानादयो अस्य इति सत्यधर्मा अर्थात् भगवान के ज्ञान आदि धर्म सत्य हैं, इसलिए वे सत्यधर्मा हैं। जगत में जिसे भी ज्ञान, ऐश्वर्य, बल आदि प्राप्त होता है, वह उनके प्रयास से प्राप्त होता है। सीमित जीव के प्रयासों से प्राप्त होने वाली सिद्धियां अल्प तथा काल से संकुचित होती है। किन्तु भगवान में वह समस्त ज्ञानादि धर्म स्वाभाविक है, कालादि से सीमित नहीं है, इसीलिए वे सत्यधर्मा कहलाते हैं। उन सत्यधर्मा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५३० –

ॐ त्रिविक्रमाय नमः

तीनों लोकों में व्याप्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who pervades Three Lokas.

त्रयो विक्रमाः त्रिषु लोकेषु क्रान्ता यस्य स त्रिविक्रमः, 'त्रीणि पादा विचक्रमे' इति श्रुतेः। अर्थात् जिनके तीन विक्रम अर्थात् डग तीनों लोकों में क्रान्त (व्याप्त) हो गए, वे भगवान त्रिविक्रम हैं। श्रुति कहती है कि अपने पैर से तीन पग चलें।' तीन लोक अर्थात् जीव की जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति रूप तीन अवस्थाएं। परमात्मा तीनों अवस्थाओं में साक्षीरूप से स्थित हैं। इस प्रकार मानों वे तीन लोक में व्याप्त हुए हैं। उन तीन अवस्थारूप लोकों के साक्षी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५३१ –

ॐ महर्षये कपिलाचार्याय नमः

महर्षि कपिलाचार्य को नमस्कार।

I salute Maharshi Kapila.

महर्षिः महांश्च असौ ऋषिश्च इति महर्षिः कृत्स्नस्य वेदस्य दर्शनात्, अन्ये तु वेदैकदेशदर्शनाद् ऋषयः कपिलश्च असौ सांख्यस्य शुद्धतत्त्वविज्ञानस्य आचार्यश्च इति कपिलाचार्यः अर्थात् जो महान् ऋषि हो, उसे महर्षि कहते हैं। सम्पूर्ण वेदों को जानने के कारण कपिल महर्षि है। अन्य केवल वेद के एक अंश को जानने के कारण ऋषि हैं। जो कपिल हैं, और सांख्यरूप शुद्ध तत्त्वविज्ञान के आचार्य भी हैं, वे ही कपिलाचार्य हैं। 'सिद्धानां कपिलो मुनिः' इति स्मृतेश्च – गीता में भी कहा है – सिद्धों में मैं कपिल मुनि हूं। उन महर्षि कपिलाचार्य को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३२ -

ॐ कृतज्ञाय नमः

जगत और आत्मारूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Creation and its Knower.

कृतं कार्यं जगत्, ज्ञ आत्मा, कृतं च तज्ज्ञश्च इति कृतज्ञः अर्थात् कृत कार्यरूप जगत् को, और ज्ञ आत्मा को कहते हैं, अर्थात् जो कृत भी हैं, और ज्ञ भी हैं, उसे कृतज्ञ हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति से कार्यरूप जगत की तरह से अभिव्यक्त हुए हैं, तथा वे ही 'ज्ञ' अर्थात् आत्मा हैं, जो इन सब को जाननेवाली है, उसकी तरह भी स्थित हैं। परमात्मा जगत रूप से प्रकाश्य हैं, तथा आत्मा रूप प्रकाशक हैं। उन प्रकाश्य और प्रकाशक की तरह स्थित अर्थात् कृतज्ञ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३३ -

ॐ मेदिनीपतये नमः

पृथ्वी के स्वामी को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of the Earth.

मेदिन्यां भूम्यां पतिः इति मेदिनीपतिः अर्थात् पृथ्वी के पति होने से मेदिनीपति हैं। परमात्मा सत्वगुण की प्रधानता से भगवान विष्णु कहलाते हैं। वे पृथ्वी के पालक हैं। सृष्टि के पालन हेतु स्वयं अवतरित होकर अधर्म को नष्ट करके धर्म की स्थापना करते हैं। इस प्रकार पृथ्वी के रक्षक तथा पालक होने की वजह से वे पृथ्वी के पति कहलाते हैं।

उन पृथ्वी के स्वामी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५३४ –

ॐ त्रिपदाय नमः

त्रिपद वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Three-Footed.

त्रीणि पदानि अस्य इति त्रिपदः 'त्रीणि पदा विचक्रमे' इति श्रुतेः अर्थात् भगवान् के तीन पाद हैं, इसलिए वे त्रिपद हैं। श्रुति कहती है – 'अपने पैर से तीन पग चले।' जीव का जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति – इन तीन अवस्थाओं में सतत आवागमन होता रहता है। परमात्मा स्वयं इन तीन अवस्थाओं में, तीन अवस्थाओं के प्रकाशक की तरह से स्थित हैं, मानों इन तीनों अवस्थाओं में वे जीव के साथ आवागमन करते हुए उसे प्रकाशित करते हैं। इसलिए वे त्रिपद हैं। उन अवस्थात्रय में आवागमन को प्राप्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३५ -

ॐ त्रिदशाध्यक्षाय नमः

अवस्थात्रय के साक्षी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Witness of the Three States.

गुणावशेन संजाताः तिस्रो दशा अवस्था जाग्रदादयः तासाम् अध्यक्ष इति त्रिदशाध्यक्षः अर्थात् गुण के आवेश से जाग्रत, स्वप्न और सुषुप्ति - ये तीन दशाएं-अवस्थाएं उत्पन्न हुई, उनके अध्यक्ष (साक्षी) होने से त्रिदशाध्यक्ष हैं। जीव को सात्विक आदि गुणों के परिवर्तन से जाग्रदादि अवस्थाएं प्राप्त होती है। इन तीनों अवस्थाओं से अप्रभावित उसके साक्षी की तरह परमात्मा स्थित हैं, मानों वे उसकी अध्यक्षता कर रहे हैं। इसलिए वे त्रिदशाध्यक्ष कहलाते हैं। उन तीन अवस्थाओं के अध्यक्ष परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३६ -

ॐ महाश्रृंगाय नमः

महान सिंगवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great-horned.

मत्स्यरूपी महति श्रृंगे प्रलयाम्भोधौ नावं बद्ध्वा चिक्रीड इति महाश्रृंगः अर्थात् भगवान् ने मत्स्यरूप होकर अपने महाश्रृंग में नाव बांधकर प्रलय–समुद्र में क्रीडा की थी, इसलिए वे महाश्रृंग हैं। प्रलय के समय जब पृथ्वी समुद्र में डूब रही थी, तब उनके पालनहार भगवान् स्वयं ही बड़े सिंगवाले मत्स्य का अवतार लेकर समस्त ऋषियों को उनके परिवार समेत नाव में बिठाकर उसे अपने सिंग से बांध कर रक्षा की थी। उन सृष्टि के उद्धारक, महान सिंग वाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५३७ –

ॐ कृतान्तकृते नमः

कार्यरूप जगत के संहारक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is causes the Cosmic Dissolution.

कृतस्य अन्तं संहारं करोति इति अर्थात् कृत – कार्यरूप जगत का संहार करते हैं, इसलिए वे कृतान्तकृत् हैं। परमात्मा स्वयं अपनी मायाशक्ति को धारण करके सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति और प्रलय करते हैं। इस कार्यजगत का संहार करनेवाले होने से वे प्रलयकर्ता परमात्मा कृतान्तकृत् कहलाते हैं।

उन कार्यजगत का संहार करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३८ -

ॐ महावराहाय नमः

महान् एवं वराह रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Great Boar.

महांश्च असौ वराहश्च इति महावराहः अर्थात् महान् और वराह भी हैं, इसलिए महावराह हैं। सतयुग में जब हिरण्याक्ष नामक असुर ने पृथ्वी को समुद्र में छिपा दिया तब भगवान ने वराह का रूप धारण किया और पृथ्वी को अपनी सूंढ़ पर धारण करके समुद्र से बाहर निकाला, इस प्रकार वराहरूप में आकर पृथ्वी का उद्धार करने की वजह से वे महावराह कहलाएं। उन महावराह रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५३९ -

ॐ गोविन्दाय नमः

वेदान्तवाक्यों से ज्ञात परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one to be Realized through Knowledge.

गोभिः वाणीभिः वेदान्तवाक्यैः विन्दते वेत्ति इति गोविन्दः, अर्थात् भगवान् को गो अर्थात् वाणी से अथवा वेदान्तवाक्यों से जानते हैं, इसलिए वे गोविन्द हैं। दृष्टि अगोचर परमात्मा को प्रत्यक्ष प्रमाण से नहीं बल्कि शब्द प्रमाण से जाना जाता है। गुरुमुख से वेदान्त का श्रवण करने पर ही उन्हें जाना जा सकता है। इसलिए वे गोविन्द कहलाते हैं।

उन प्रमाण स्वरूप वेदान्तवाक्यों से ही ज्ञात परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४० –

ॐ सुषेणाय नमः

सुन्दर सेनावाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has an Enchanting Army.

शोभना सेना गणात्मिका यस्य इति सुषेणः अर्थात् जिनकी पार्षद रूप सुन्दर सेना है, वे भगवान् सुषेण हैं। भगवान के गण के रूप में अनेकों ऋषिगण आदि हैं। वे इतने सुन्दर होते हैं कि बलात् उनकी सुन्दरता अपनी ओर आकृष्ट करके मंत्रमुग्ध कर देती हैं। इसलिए वे सुन्दर सेनावाले सुषेण कहलाते हैं।

उन सुन्दर सेनावाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४१ –

ॐ कनकांगदिने नमः

स्वर्ण के भुजबन्धवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one with Golden Armlet.

कनकमयानि अंगदानि अस्य इति कनकांगदी अर्थात् जिनके कनकमय–स्वर्ण के, अंगद अर्थात् भुजबन्ध हैं, वे भगवान कनकांगदी कहलाते हैं। भगवान सृष्टि की रक्षा हेतु अवतार धारण करके अपनी सशक्त बाहू से अधर्मगामी असुरों का संहार करते हैं। उन सशक्त और सुन्दर बाजुओं पर धारण किए होने की वजह से उन आभूषण रूप स्वर्ण के बाजुबन्ध की शोभा और भी बढ़ जाती है। उन कनकांगद परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४२ –

ॐ गुह्याय नमः

हृदयाकाश में छिपे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who hides in our hearts.

गुहायां हृदयाकाशे निहितं इति वा गुहः अर्थात् गुह्य यानी हृदयाकाश में छिपे होने के कारण गुह्य हैं। परमात्मा सब के हृदय में उनकी आत्मा की तरह से स्थित हैं। प्रत्येक जीव अज्ञान एवं मोह के वशीभूत होकर बाहर ही खोजता रहता है। इस प्रकार परमात्मा मानों हृदयाकाश में छिप कर बैठें हैं। इसलिए वे गुह्य कहलाते हैं।

उन हृदयाकाश में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५४३ -

ॐ गभीराय नमः

गम्भीरस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Unfathomable.

ज्ञानैश्वर्य बल, वीर्य आदिभिः गम्भीरो गभीरः अर्थात् ज्ञान, ऐश्वर्य, बल और पराक्रम आदि के कारण गम्भीर होने से गभीर हैं। भगवान छह भग अर्थात् ऐश्वर्य से युक्त हैं। समस्त ऐश्वर्य उनमें परिपूर्ण मात्रा में है, उनके लेशमात्र से ही अन्य मनुष्य, देवता आदि को सामर्थ्य व ऐश्वर्य प्राप्त है। जहां अपने से भिन्न किसी के भी साथ तुलना अथवा विशिष्टता का अभिमान नहीं है, वहीं पर शान्त और गम्भीरता होती है। अतः परमात्मा गभीरस्वरूप है। उन गम्भीर स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५४४ -

ॐ गहनाय नमः

गहन रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is very subtle.

दुष्प्रवेशत्वात् गहनः अर्थात् कठिनता से प्रवेश किये जाने योग्य होने से गहन हैं। परमात्मा सब के हृदय में आत्मा की तरह से स्थित हैं। जीव अज्ञानवशात् अपने से पृथक बाह्य जगत में ही उनकी तलाश करता है, तथा उन्हें अन्य पदार्थो की तरह एक विषय की तरह ही जानने की चेष्टा करता है। इसलिए अपनी आत्मा होते हुए भी उनको पाना दुर्लभ हो जाता है। इसलिए परमात्मा गहन कहे जाते है।

उन गहन रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४५ –

ॐ गुप्ताय नमः

छिपे हुए परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is well-concealed.

वांग्मनसा अगोचरत्वात् गुप्तः 'एष सर्वेषु भूतेषु गूढोत्मा न प्रकाशते' अर्थात् वाणी और मन के अविषय होने से गुप्त हैं। श्रुति कहती हैं – 'सब भूतों में छिपा हुआ यह आत्मा प्रकाशित नहीं होता'। जीव अपनी स्वाभाविक बहिर्मुखता के कारण परमात्मा को अपने उपलब्ध संसाधन वाणी और मन के द्वारा विषयीकृत करना चाहता है, किन्तु वे इन करणों का प्रयोग करनेवाले जीव की आत्मा की तरह से स्थित हैं। मानों वहीं पर छिपकर बैठे़ हैं। उन गुप्तरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५४६ -

ॐ चक्रगदाधराय नमः

चक्र और गदाधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Bearer of Discus & Mace.

मनस्तत्त्वात्मकं चक्रं बुद्धितत्त्वात्मिकां गदाम्, धारयन् लोकरक्षार्थं उक्तश्चक्रगदाधरः।। इति चक्र-गदाधरः अर्थात् 'मनस्तत्त्वरूप चक्र और बुद्धि तत्त्वरूप गदा को लोक-रक्षा के लिए धारण करने से भगवान् चक्रगदाधर कहलाते हैं' इस उक्ति के अनुसार भगवान् चक्रगदाधर हैं। भगवान प्रेम और विवेक से युक्त होकर जगत की रक्षा करते हैं। इसलिए वे चक्रगदाधर हैं।

उन चक्रगदाधर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४७ –

ॐ वेधसे नमः

विधान करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Creator.

विधाता वेधाः विधान करनेवाले हैं, इसलिए परमात्मा वेधा हैं। जगत के सृष्टा परमात्मा जगत का सृजन करते हैं, तथा उसकी रक्षा करने और सुचारु रूप से उसकी व्यवस्था बनी रहे, तथा जीवों को अपने अपने कर्म का योग्य फल प्राप्त हो सके – इस प्रयोजन को ध्यान में रखकर शास्त्र के द्वारा विविध विधान का प्रतिपादन करते हैं। इसलिए वे वेधा कहे जाते हैं।

उन विधान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५४८ –

ॐ स्वांगाय नमः

कार्य करनेमें सहकारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Self-Instrumental.

स्वयमेव कार्यकरणे अंगे सहकारि इति स्वांगः अर्थात् कार्य करने में स्वयं ही अंग अर्थात् सहकारी हैं, इसलिए स्वांग हैं। किसी भी वस्तु के सृजन हेतु स्वाभाविक ही प्रश्न होता है कि उसके लिए आवश्यक साधन क्या होते है? उसी प्रकार सृष्टि के सृजन के विषय में भी इस प्रश्न की सम्भावना है। सृष्टि हेतु परमात्मा स्वयं ही साधन रूप से भी होते हैं, क्योंकि परमात्मा से भिन्न अन्य किसी का भी अस्तित्व है ही नहीं। इसलिए वे स्वांगरूप कहे जाते हैं। उन स्वांगरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५४९ -

ॐ अजिताय नमः

अजित स्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Invincible.

न केनापि अवतारेषु जितः इति अजितः अर्थात् अपने अवतारों में किसीसे नहीं जीते गए, इसलिए अजित हैं। अधर्म की वृद्धि होने पर परमात्मा प्रत्येक युग में अवतरित होकर धर्मविरोधी तत्त्वों को समाप्त करते हैं। अपने किसी भी अवतार में वे किसी से भी कभी भी जीते नहीं जाते हैं। सदैव अजेय होकर धर्म की पुनःस्थापना करते हैं। क्योंकि सभी शक्तियां परमात्मा के अधीन है, अतः किसी के भी द्वारा वे जीते नहीं जा सकते है।

उन अजितस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५५० –

ॐ कृष्णाय नमः

भगवान् वेदव्यासजी को नमस्कार।

I salute Krishna Dvaipaayana - Vyaasa.

कृष्णः द्वैपायनः, कृष्णद्वैपायनं व्यासं विद्धि नारायणं प्रभुम्। को ह्यन्यः पुण्डरीकाक्षात् महाभारतकृद् भवेत्।।' अर्थात् कृष्णद्वैपायन ही कृष्ण हैं; जैसा कि विष्णुपुराण में कहा हैं – कृष्णद्वैपायन व्यास को प्रभु नारायण ही जानो, भला भगवान् पुण्डरीकाक्ष को छोड़कर महाभारत का रचनेवाला और कौन हो सकता हैं? मंत्रदृष्टा ऋषियों के द्वारा प्रदत्त ज्ञान की ऋचाओं को चार वेदों के रूप में संकलन करनेवाले, अष्टादश पुराण, महाभारत तथा ब्रह्मसूत्र के रचयिता कृष्णद्वैपायन ऋषि वेदव्यासजी स्वयं भगवान विष्णु के ही ज्ञान–अवतार थे। उन वेदव्यासजी को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५५१ –

ॐ दृढाय नमः

स्वरूप में दृढ़ परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Resolute.

स्वरूपसामर्थ्यादे प्रच्युति अभावात् दृढः अर्थात् भगवान् के स्वरूप एवं सामर्थ्यादि की कभी च्युति नहीं होती, इसीलिए वे दृढ़ हैं। जब–जब अधर्म की वृद्धि और धर्म की हानि होती है, तब–तब परमात्मा धर्म की संस्थापना हेतु अवतरित होते हैं। वे इसी जगत में सीमित और विकारी शरीर को धारण करते हैं। उन विकारी शरीर में स्थित होने के बावजूद अपने स्वरूप और सामर्थ्यों से च्युत नहीं होते हैं। अतः वे दृढ़ कहे जाते हैं। उन स्वरूपादि में दृढ़ परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५५२ –

ॐ संकर्षणाच्युताय नमः

कार्यजगत के संहारक परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Destroyer.

संहारसमये युगपत् प्रजाः संकर्षति इति संकर्षणः, न च्योतति स्वरूपात् इति अच्युतः अर्थात् संहार के समय एक साथ ही प्रजाका आकर्षण करते हैं, इसलिए संकर्षण हैं तथा अपने स्वरूप से च्युत भी नहीं होते हैं इसलिए अच्युत हैं, इस प्रकार वे संकर्षणो–अच्युत हैं। प्रलयकाल में परमात्मा अपने स्वस्वरूप में स्थित रहते हुए समस्त प्रजा को मानों एक साथ ही अपने में समा लेते हैं, इसलिए वे संकर्षण–अच्युत हैं। उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५३ -

ॐ वरुणाय नमः

सायंकालीन सूर्यरूप से स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Setting Sun.

स्वरश्मीनां संवरणात् सायंगतः सूर्यो वरुणः अर्थात् अपनी किरणों का संवरण करने के कारण सायंकालीन सूर्य वरुण हैं। सूर्य का उदय होते ही प्रातः वह अपनी किरणों को चारो ओर प्रसारित करता हैं तथा सायं होते ही मानों किरणों का संवरण कर लेता है। वह सायंकालीन सूर्य भी परमात्मा की विभूतिरूप हैं। इसलिए वे वरुण कहलाते हैं। उन सायंकालीन सूर्य रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५४ -

ॐ वारुणाय नमः

वरुणपुत्र परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Son of Varuna.

वरुणस्य अपत्यं वसिष्ठः अगस्त्यो वा वारुणः अर्थात् वरुण के पुत्र वसिष्ठ वा अगस्त्य वारुण हैं। महान सप्त ऋषियों में स्थान को प्राप्त वरुण के पुत्र अगस्त्य तथा भगवान श्रीराम के गुरुदेव वसिष्ठजी परमात्मा की ही विभूति है अर्थात् परमात्मा ही इस रूप में अभिव्यक्त हैं। अतः वे वारुण कहलाते हैं।

उन वरुणपुत्र अगस्त्य और वसिष्ठ रूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५५ -

ॐ वृक्षाय नमः

वृक्ष की तरह स्थित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is firm like Tree.

वृक्षः इव अचलतया स्थित इति वृक्षः अर्थात् वृक्ष के समान अचल भाव से स्थित हैं, इसलिए वृक्ष हैं। जिस प्रकार वृक्ष का अनेकों शाखाओं, पत्तों, फूल, फल आदि के रूप में विस्तार होता है। वैसे ही परमात्मा मानों इस विविधतापूर्ण नामरूपात्मक जगत के रूप में विस्तार को प्राप्त हुए है। उन सब नामरूपों के सतत परिवर्तन, विकारादि के मध्य में भी परमात्मा वृक्षवत् अडिग रहते हैं।

उन वृक्षवत् अचल परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५६ -

ॐ पुष्कराक्षाय नमः

हृदयकमल में दर्शनीय परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who abides in a resplendent way in all hearts.

हृदयपुण्डरीके चिन्तितः स्वरूपेण प्रकाशते इति पुष्कराक्षः अर्थात् हृदयकमल में चिन्तन किए जाने पर चेतन स्वरूप से प्रकाशित होते हैं, इसलिए पुष्कराक्ष हैं। सबके हृदय रूपी कमल में जो चेतनस्वरूप से प्रकाशित हो रहे हैं, वे ही परमात्मा हैं। इस प्रकार परमात्मा का चिन्तन करने पर उनका दर्शन हृदयकमल में होता है। इसलिए वे पुष्कराक्ष कहलाते हैं।

उन पुष्कराक्ष रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५७ -

ॐ महामनसे नमः

महान मनवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who has a Great-Mind.

सृष्टिस्थिति-अन्तकर्माणि मनसा एव करोति इति महामना:, 'मनसैव जगत्सृष्टिं संहारं च करोति यः।' इति विष्णुपुराणे। अर्थात् सृष्टि, स्थिति और अन्त - ये तीनों कर्म मनसे ही करते हैं, इसलिए महामना हैं। विष्णुपुराण में कहा है - जो मन से ही जगत की उत्पत्ति, स्थिति और संहार करते हैं।' समस्त सृष्टि की उत्पत्ति, स्थिति एवं लय परमात्मा के संकल्पमात्र से ही होते हैं। अतः वे महामना हैं।

उन महामना रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५५८ –

ॐ भगवते नमः

छः भग वाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Endowed with 6 Glories.

'ऐश्वर्यस्य समग्रस्य धर्मस्य यशसः श्रियः। ज्ञानवैराग्ययोश्चैव षण्णां भग इतीरणा।।' सोऽस्य अस्ति इति भगवान् अर्थात् सम्पूर्ण ऐश्वर्य, धर्म, यश, श्री, ज्ञान और वैराग्य – इन छ का नाम भग है' यह छः जिसमें भी पूर्णमात्रा में है, वही भगवान् हैं। उन्हींके ऐश्वर्यादि का लेश जगत में अन्य सबको प्राप्त होते है। अतः परमात्मा भगवान कहलाते हैं।

उन छः भग से युक्त परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५५९ -

ॐ भगघ्ने नमः

अपने भग के हन्ता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Destroyer during Deluge.

ऐश्वर्यादिकं संहारसमये हन्ति इति भगहा अर्थात् संहार के समय ऐश्वर्य आदि का हनन करते हैं, इसलिए भगहा हैं। प्रलय के समय परमात्मा अपने समस्त ऐश्वर्य आदि भग को भी अपने में विलीन करके निर्विकल्प रूप में स्थित हो जाते हैं। इस प्रकार अपने समस्त भग का संहार करने के कारण वे भगहा कहलाते हैं।

उन सब भग के संहारक परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६० -

ॐ आनन्दिने नमः

आनन्दस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bliss by Nature.

सुखस्वरूपत्वात् आनन्दी इति अर्थात् सुखस्वरूप होने से आनन्दी हैं। परमात्मा स्वयं आनन्दस्वरूप हैं, अतः उन्हें सुख की प्राप्ति हेतु अन्य किसी भी भोग्य जगत की आवश्यकता नहीं है। उसी तरह से जो भी ज्ञानीजन भगवद्प्राप्ति कर लेते हैं, वे भी अपने अन्दर अपने आप में ही कृतार्थ देखे जाते हैं। उन आनन्दस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५६१ –

ॐ वनमालिने नमः

वैजयन्ति मालाधारी को नमस्कार।

I salute the one who is Adorned with garland of Vaijayantee.

भूततन्मात्ररूपां वैजयन्त्याख्यां वनमालां वहन् वनमाली अर्थात् भूततन्मात्राओं की बनी हुई वैजयन्ती नाम की वनमाला धारण करने से भगवान् वनमाली कहलाते हैं। पंचमहाभूत से निर्मित विविधतापूर्ण यह जगत, विविध पुष्पों की तरह है, उसीकी माला से परमात्मा शोभायमान हो रहे हैं, अतः वे वनमाली कहलाते हैं। उन पंचभूतात्मक मालाधारी वनमाली परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६२ -

ॐ हलायुधाय नमः

हलरूप अस्त्रधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Wielder of Plough as Weapon.

हलम् आयुधम् अस्येति हलायुधः बलभद्राकृतिः अर्थात् हल ही जिनका आयुध है, वे बलभद्रस्वरूप भगवान् हलायुध हैं। भगवान स्वयं हलरूप आयुध को धारण किए हुए बलराम की तरह से अवतरित हुए थे। इसलिए वे हलायुध कहलाए।

उन हलरूपी अस्त्रधारी बलराम रूप में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६३ -

ॐ आदित्याय नमः

अदितिपुत्र परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Son of Aditi.

अदित्यां कश्यपाद् वामनरूपेण जातः आदित्यः अर्थात् कश्यपजी के द्वारा वामनरूप से अदिति के गर्भ से उत्पन्न हुए थे, इसलिए आदित्य हैं। परमात्मा स्वयं कश्यप और अदिति के पुत्र वामन रूप से अवतरित हुए थे और राजा बलि से त्रिपाद भूमि मांगकर उनका अभिमान भंग किया था। अदितिपुत्र होने से वे आदित्य कहलाए।

उन अदितिपुत्र वामन रूप में अवतरित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६४ -

ॐ ज्योतिरादित्याय नमः

सूर्यमण्डल की ज्योतिरूप से स्थित को नमस्कार।

I salute the Resplendence in the Sun.

ज्योतिषि सवितृमण्डले स्थितो ज्योतिरादित्यः अर्थात् सूर्यमण्डल के अन्तर्गत ज्योति में स्थित हैं, इसलिए ज्योतिरादित्य हैं। सूर्यमण्डल में स्थित समस्त ग्रह, नक्षत्र, तारागण प्रकाश के पुंज हैं। उन प्रकाशपुंज का प्रकाश अर्थात् ज्योति परमात्मा की वजह से है। अर्थात् परमात्मा ही उनमें ज्योतिरूप में स्थित होने से वे ज्योतिरादित्य कहलाते हैं।

उन सूर्यमण्डल में ज्योतिरूप से स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५६५ –

ॐ सहिष्णवे नमः

द्वन्द्वों को सहनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Endurer.

द्वन्द्वानि शीतोष्णादीनि सहत इति सहिष्णुः अर्थात् शीतोष्ण आदि द्वन्द्वों को सहन करते हैं, इसलिए सहिष्णु हैं। उपाधि के धरातल पर अनुभव में आनेवाले विविध शीत–उष्ण, सुख–दुःख, मान–अपमान आदि द्वन्द्वों के मध्य में परमात्मा सभी जीवों में साक्षी की तरह निरपेक्ष रूप से स्थित रहते हैं। मानों इस प्रकार से सभी द्वन्द्वों के साक्षी रहकर उसे सहते हैं। इसलिए वे सहिष्णु हैं। उन द्वन्द्वों को सहनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६६ -

ॐ गतिसत्तमाय नमः

महान लक्ष्यरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Most Exalted Goal.

गतिश्च असौ सत्तमश्च इति गतिसत्तमः अर्थात् गति हैं, और सर्वश्रेष्ठ हैं, इसलिए गतिसत्तम हैं। प्रत्येक जीव किसी न किसी लक्ष्य से प्रेरित होकर कार्य करता हैं। विविध लक्ष्यों को पाने के उपरान्त भी वह संतुष्ट नहीं होता है। किन्तु परमात्मा रूप लक्ष्य अथवा गति को जिसने पा लिया उसे जीवन में अन्य कुछ भी पाने की अपेक्षा नहीं रहती है। अतः वे समस्त गतियों में श्रेष्ठ माने जाते हैं। उन सर्वश्रेष्ठ गतिरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६७ -

ॐ सुधन्विने नमः

सुन्दर धनुर्धारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bearer of Glorious Bow.

शोभनमिन्द्रियादिमयं शांर्ग धनुः अस्य अस्ति इति सुधन्वा अर्थात् भगवान का इन्द्रियादिमय सुन्दर शांर्ग धनुष है, इसलिए वे सुधन्वा हैं। भगवान के धनुष का नाम शांर्ग है। धनुष एक शस्त्र होता है, जिसे शस्त्रधारी अपनी इच्छा और स्वतंत्रता से प्रयोग करता है। भगवान का धनुष इन्दिय आदि रूप माना गया है, क्योंकि वे इसका प्रयोग स्वेच्छा और स्वतंत्रता से करने में समर्थ हैं। उन सुन्दर धनुष-धारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५६८ -

ॐ खण्डपरशवे नमः

परशुधारी परशुराम को नमस्कार।

I salute the one who is Wielder of Invincible Axe

शत्रूणां खण्डनात् खण्डः परशुः अस्य जामदग्न्याकृतेः इति खण्डपरशुः अर्थात् शत्रुओं का खण्डन करने से जिन परशुराम स्वरूप भगवान का परशु खण्ड कहलाता हैं, वे खण्डपरशु हैं। जिस समय सत्ता पाने की वजह से क्षत्रियों का आतंक बढ़ गया था, तब भगवान के अवतार रूप परशुराम ने परशु को धारण करके पूरी पृथ्वी को क्षत्रियविहीन कर दिया था। इस खण्ड वा परशु को धारण करके अधर्म को खण्ड-खण्ड कर देने की वजह से वे परशुराम कहलाएं। उनको नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५६९ –

ॐ दारुणाय नमः

कठोर रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Merciless to the Unrightous.

सन्मार्गविरोधिनां दारुणत्वात् दारुणः अर्थात् सन्मार्ग के विरोधियों के लिए कठोर होने के कारण दारुण हैं। सृष्टि की स्थिति और व्यवस्था धर्म स्थापित होने से ही सम्भव है। जब जब धर्म अनुगामी के मार्ग में असुर आदि अधर्मी व्यवधान बनते है, तब परमात्मा स्वयं अवतरित होकर उग्ररूप धारण करके अथवा उसके कर्मों का तदनुरूप फल प्रदान करके उसे कठोर रूप से दण्डित करते हैं। अतः वे दारुण कहलाते हैं। उन कठोर परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७० –

ॐ द्रविणप्रदाय नमः

इष्ट धन देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Bestower of Wealth.

द्रविणं वांछितं भक्तेभ्यः प्रददाति इति द्रविणप्रदः अर्थात् भक्तों को द्रविण अर्थात् इच्छित धन देते हैं, इसलिए द्रविणप्रद हैं। भक्त वह होता है, जिसे भगवान प्रिय लगते हैं। भक्त के लिए भक्ति और भगवान की प्राप्ति ही सबसे वांछित धन होता है। भगवान अपने भक्तों के प्रति प्रसन्न होकर उन्हें अपना ज्ञान और भक्ति रूपा धन देते हैं, इसलिए उनका यह द्रविणप्रद नाम हैं।

उन द्रविणप्रद परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७१ –

ॐ दिवःस्पृशे नमः

स्वर्ग का स्पर्श करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one whose form as though touches the heavens.

दिवः स्पर्शनात् दिवःस्पृक् अर्थात् स्वर्ग का स्पर्श करने से दिवःस्पृक् हैं। भगवान ने जब अर्जुन को अपने विराट स्वरूप का दर्शन कराया था, तब वह रूप इतना विराटकाय था कि वह स्वर्ग को भी मानों स्पर्श कर रहा था, इसलिए वे दिवःस्पृक् कहलाए।

उन स्वर्ग को भी स्पर्श करनेवाले विराटस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७२ –

ॐ सर्वदृग्व्यासाय नमः

ज्ञान का विस्तार करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Seer & Elaborator of Truth

सर्वदृशानां सर्वज्ञानानां विस्तारकृद् व्यासः सर्वदृग्व्यासः अर्थात् सम्पूर्ण ज्ञानों का विस्तार करनेवाले व्यास हैं, इसलिए सवदृग्व्यास हैं। समस्त ज्ञान को देनेवाले स्वयं परमात्मा ही हैं। वे ही अनेकों ऋषियों तथा मनीषियों के माध्यम से ज्ञान की परम्परा का निर्वाह करते हुए श्रुति के द्वारा ज्ञान का विस्तार करनेवाले हैं। इसलिए वे सर्वदृग्व्यास कहे जाते हैं। उन ज्ञान का विस्तार करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५७३ -

ॐ वाचस्पतये अयोनिजाय नमः

अजन्मा, विद्यापति परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Unborn Lord of Knowledge.

वाचो विद्याया: पति: वाचस्पति:, जनन्यां न जायते इति अयोनिज: अर्थात् वाक् अर्थात् विद्या के पति होने से वाचस्पति हैं और जननी से जन्म नहीं लेते, इसलिए अयोनिज हैं। इस प्रकार वाचस्पतिरयोनिज हैं। समस्त ज्ञान का वास्तविक स्रोत परमात्मा स्वयं है, किन्तु स्वयं अजन्मा अर्थात् अयोनिज हैं। इसलिए वे वाचस्पति-अयोनिज कहे जाते हैं। उन विद्यापति, अजन्मा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७४ –

ॐ त्रिसाम्ने नमः

तीन साम से स्तुत्य परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Glorified by the Three Saamas.

देवव्रतसामाख्यातैः त्रिभिः सामभिः सामगैः स्तुतः इति त्रिसामा अर्थात् देव, व्रत और साम नामक तीन सामों द्वारा सामगान करनेवालों से स्तुति किए जाते हैं, इसलिए त्रिसामा हैं। परमात्मा की साम के मंत्रों के द्वारा स्तुति की गई है। उन सामगान करनेवाले प्रसिद्ध देव, व्रत और साम रूप तीन साम के द्वारा स्तुति किए जाने की वजह से वे त्रिसाम कहे जाते हैं। उन सामत्रय से स्तुति योग्य परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७५ –

ॐ सामगाय नमः

सामगान करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Singer of Saama Mantras.

साम गायति इति सामगः अर्थात् सामगान करते हैं, इसलिए सामग हैं। सामवेद के दिव्य मंत्रों का गान करने के द्वारा परमात्मा की स्तुति करके उनका आवाहन किया जाता हैं। ऐसे साम के दिव्य मंत्रों के गान करनेवाले की तरह स्वयं परमात्मा ही विराजमान हैं। इसलिए वे भी सामगा कहे जाते हैं।

उन सामगान करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५७६ -

ॐ साम्ने नमः

सामवेद रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Saama Veda.

'वेदानां सामवेदोऽस्मि' इति भगवद् वचनात् सामवेदः सामः अर्थात् 'वेदों में मैं सामवेद हूं'। समस्त वेदों में सामवेद की विशेषता है। यह सामवेद गान प्रधान होता है। इसके मंत्र परमात्मा की स्तुति और आवाहन हेतु प्रयोग होते है। जिसके मंत्रों में ऐसी दिव्यशक्ति हो, वे स्वयं परमात्मा की विभूतिरूप ही है। इसलिए गीता में भी भगवान बताते हैं कि, 'वेदों में मैं सामवेद हूं।

उन दिव्य सामरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५७७ -

ॐ निर्वाणाय नमः

मुक्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is naturally free.

सर्वदुःख उपशमलक्षणं परमानन्दरूपं निर्वाणम् अर्थात् सब दुःखों से रहित परमानन्दस्वरूप ब्रह्म ही निर्वाण हैं। परमात्मा समस्त बन्धन से परे नित्य शुद्ध, बुद्ध, मुक्त स्वरूप होने से उनमें दुःख आदि का अत्यन्त अभाव है। इसलिए वे समस्त बन्धन से रहित निर्वाण स्वरूप हैं।

उन निर्वाण रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७८ –

ॐ भेषजाय नमः

संसाररोग की औषधि रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Remedy for Samsaar.

संसाररोगस्य औषधम् भेषजं अर्थात् संसाररूप रोग की औषधि होने से भेषज हैं। अपने स्वरूप के अज्ञानवशात् जीव संसरण करता रहता है। जब अपने स्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके परमात्मा को अपनी आत्मा की तरह जान लेता है, तब ही संसरण से मुक्त हो जाता है। परमात्मा की अपने स्वस्वरूप की तरह प्राप्ति ही संसाररोग से मुक्ति हेतु औषधि है। इसलिए परमात्मा को संसाररोग के लिए औषधि कहा गया। उन संसाररोग की औषधि रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५७९ –

ॐ भिषजे नमः

वैद्य रूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Divine Physician.

संसाररोगनिर्मोक्षकारिणीं परां विद्यामुपदिदेश गीतासु इति भिषक् अर्थात् गीता में संसाररूप रोग से छुड़ानेवाली पराविद्या का उपदेश किया हैं, इसलिए भगवान भिषक् हैं। भवरोग से मुक्ति हेतु एक मात्र उपाय परमात्मा का ज्ञान है। मुक्ति का यह ज्ञान मुक्त स्वरूप परमात्मा ही दे सकते हैं। वे ही गुरु के रूप में अवतरित होकर शिष्य के अज्ञानजनित भवरोग का निदान करते हैं। इसलिए वे भिषक् अर्थात् वैद्य हैं। उन वैद्य रूप में स्थित परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८० -

ॐ सन्यासकृते नमः

संन्यासाश्रम के रचयिता परमात्मा को नमस्कार।

I salute the Institutor of Sannyas Ashram.

मोक्षार्थं चतुर्थम् आश्रमं कृतवान् इति संन्यासकृत् अर्थात् मोक्ष के लिए चतुर्थ संन्यास आश्रम की रचना की है, इसलिए संन्यासकृत हैं। चार आश्रम की व्यवस्था के अन्तर्गत संसार से मुक्ति हेतु एक मात्र संन्यास आश्रम को बताया गया है। इन चारों आश्रमों में प्रथम तीन आश्रम तो जीव स्वतः पा लेता है। किन्तु मोक्ष के लिए संन्यस्त होनेवाला विरला होता है। इसलिए यहां संन्यास आश्रम की रचना करनेवाले के रूप में विशेषरूप से द्योतित किया गया है। उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५८१ –

ॐ शमाय नमः

शमन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Calmer.

सर्वभूतानां शमयिता इति शमः अर्थात् सब प्राणियों का शमन करनेवाले हैं, इसलिए भगवान शम हैं। प्रलयकाल में परमात्मा ही सभी प्राणियों का शमन अर्थात् शान्त कर देते हैं। इस कारण सभी प्राणी अपनी बीजावस्था में लय को प्राप्त होते है। सभी प्राणियों का शमन करने के कारण वे शमस्वरूप कहलाते हैं।

उन शमस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८२ -

ॐ शान्ताय नमः

शान्तस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Serene.

विषयेषु असंगतया शान्तः अर्थात् विषयसुखों में अनासक्त होने के कारण शान्त हैं। अपने स्वरूप के अज्ञानवशात् जीव का विषयसुख की प्राप्ति हेतु स्वाभाविक ही आकर्षण रहता है, वही उसमें विक्षेप का कारण बनता है। परमात्मा में अपनी पूर्णस्वरूपता के ज्ञान की वजह से विषयसुख उन्हें प्रेरित नहीं करता है। इसलिए वे आसक्तिरहित शान्तस्वरूपता में स्थित हैं। उन शान्तस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८३ -

ॐ निष्ठायै नमः

प्राणियों की निष्ठारूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Abode of the Universe.

प्रलये नितरां तत्रैव तिष्ठन्ति भूतानि इति निष्ठा अर्थात् प्रलयकाल में प्राणी सर्वथा भगवान में ही स्थित रहते हैं, इसलिए वे निष्ठा हैं। जिस समय जगत का प्रलय होता है, तो समस्त प्राणीजगत अपनी बीज अवस्था में विलीन हो जाते हैं। यह बीजावस्था अर्थात् परमात्मा की माया परमात्मा पर ही आश्रित रहती है। इस प्रकार सभी जीव मानों परमात्मा में ही स्थित रहते हैं। इसलिए परमात्मा समस्त प्राणियों की निष्ठारूप हैं। उन परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८४ -

ॐ शान्तये नमः

शान्तिस्वरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Peace himself.

समस्त अविद्यानिवृत्तिः शान्तिः सा ब्रह्मैव अर्थात् सम्पूर्ण अविद्या की निवृत्ति ही शान्ति हैं, वह शान्ति ब्रह्मरूप ही हैं। जब तक अज्ञान होता है, तब तक ही द्वैतरूप संसार होता है। सत्य अर्थात् परमात्मा अज्ञान और उससे जनित विक्षेप से रहित शान्त, अद्वयस्वरूप हैं। अज्ञान और उसके कार्यरूप संसार से रहित परमात्मा स्वयं शान्तिस्वरूप हैं।

उन शान्तिरूपा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५८५ –

ॐ परायणाय नमः

परं गन्तव्यरूप परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Supreme Goal.

परं उत्कृष्टं अयनं स्थानं पुनरावृत्तिशंकारहितमिति परायणम् अर्थात् पुनरावृत्ति की शंका से रहित परं उत्कृष्ट अयन अर्थात् स्थान हैं, इसलिए परायण हैं। सभी जीवों का वास्तविक स्थान परमात्मा ही है। अज्ञानवशात् अपने आपको परमात्मा से पृथक् मानता है। जिस समय स्वस्वरूप का ज्ञान प्राप्त करके वह परमात्मा की अवस्था को प्राप्त कर जाता है, उसके उपरान्त संसार में आवागमन समाप्त हो जाता है। अतः परमात्मा की अवस्था ही वास्तविक, सर्वोत्कृष्ट स्थान है। उन सबके परायणरूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८६ -

ॐ शुभांगाय नमः

सुन्दर शरीरधारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Most Enchanting.

सुन्दरां तनुं धारयन् शुभांगः अर्थात् सुन्दर शरीर धारण करने के कारण भगवान् शुभांग हैं। धर्म की रक्षा हेतु परमात्मा अपनी मायाशक्ति को वश में करके सुन्दर शरीर धारण करते हैं। पुराणों में सुन्दरता का प्रतीक रूप कामदेव बताए गए है। किन्तु भगवान की सुन्दरता वर्णन करते हुए बताते हैं कि मानों करोड़ों कामेदव की सुन्दरता एक में ही समा गई हो। शारीरिक सुन्दरता के साथ सुन्दर सात्विक मन भगवान की सुन्दरता को ओर भी अधिक सुन्दर बनाता है। उन सुन्दर शरीरधारी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५८७ -

ॐ शान्तिदाय नमः

शान्ति देनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Conferer of Peace.

रागद्वेषादिनिर्मोक्षलक्षणां शान्तिं ददाति इति शान्तिदः अर्थात् राग-द्वेषादि से मुक्त हो जानारूप शान्ति देते हैं, इसलिए शान्तिद हैं। समस्त पसंद-नापसंद ही मन में अशान्ति और विक्षेप का कारण होते हैं। पसंद और नापसंद जगत के प्रति महत्वबुद्धि के कारण होते हैं। जगदीश्वर के प्रति भक्ति से ही रागादि शिथिल होने लगते हैं, और मन शान्त होता है। इस प्रकार शान्तस्वरूप परमात्मा ही शान्ति प्रदान करते हैं। उन शान्ति देनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५८८ –

ॐ स्रष्ट्रे नमः

जगत्सृष्टा परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Creator of All Beings.

सर्गादौ सर्वभूतानि ससर्जे सृष्टा अर्थात् सर्ग के आरम्भ में सब भूतों को रचा हैं, इसलिए सृष्टा हैं। समस्त पंचभूतात्मक जगत की उत्पत्ति परमात्मा से ही हुई है। वे ही सब का सृजन करनेवाले हैं। इसलिए वे सृष्टा कहलाते हैं।

उन सृष्टि का सृजन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५८९ –

ॐ कुमुदाय नमः

पृथ्वी में मुदित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Reveller in the Earth.

कौ भूम्यां मोदते इति कुमुदः अर्थात् कु अर्थात् पृथ्वी में मुदित होते हैं, इसलिए कुमुद हैं। भगवान सृष्टि के पालन हेतु सदैव तत्पर रहते हैं, इसलिए धर्म की स्थापना हेतु वे स्वयं शरीरधारण करके पृथ्वी पर अवतरित होते हैं। यह दर्शाता है कि भगवान को अपनी सृष्टि से प्रेम हैं और पूर्णस्वरूप होते हुए भी पृथ्वी पर अवतरित होकर विचरण करने में प्रसन्नता का अनुभव करते हैं। उन कुमुद स्वरूप परमात्मा को सादर नमन।

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९० –

ॐ कुवलेशयाय नमः

समुद्र में शयन कर रहे परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Reclining in the Water.

को क्षितेर्वलनात् संसरणात् कुवले जलं, तस्मिन् शेते इति कुवलेशयः अर्थात् कु अर्थात् पृथ्वी का वलन करने से, घेरने से जल कुवल कहलाता है, उसमें शयन करते हैं, इसलिए कुवलेशय हैं। कुवल अर्थात् समुद्र। पुराणानुसार भगवान विष्णु क्षीरसागर में शयन करते हैं। इसलिए वे कुवलेशय कहलाते हैं।

उन समुद्र में शयन करनेवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५९१ -

ॐ गोहिताय नमः

पृथ्वी के हितकारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Protector of the Earth.

गोः भूमेः भारावतरण इच्छया शरीरग्रहणं कुर्वन गोहितः अर्थात् गो - पृथ्वी का भार उतारने के लिए अपनी इच्छा से शरीर धारण करने के कारण गोहित हैं। यह भगवद् वचन है कि; 'जब पृथ्वी पर अधर्म की वृद्धि तथा धर्म का ह्रास होता है, तब तब हम धर्म संस्थापना तथा अधर्म नाश हेतु शरीर धारण करके अवतरित होते हैं।' पृथ्वी के हित के लिए भगवान स्वयं अवतरित होते हैं, इसलिए वे गोहित कहलाते हैं। उन पृथ्वी के हितैषी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९२ –

ॐ गोपतये नमः

भूमि के स्वामी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Lord of the Earth.

गोः भूम्याः पतिः गोपतिः अर्थात् गो – भूमि के पति होने के कारण भगवान् गोपति हैं। पति अथवा स्वामी का दायित्व होता है कि उनके पर आश्रित की सुख और सुरक्षा की पर्याप्त व्यवस्था करें। परमात्मा सत्वगुण की प्रधानता से भगवान विष्णु के रूप में सृष्टि का पालन करते हैं। उनकी सुरक्षा हेतु समय समय पर अवतरित होते हैं। अतः वे भूमि के स्वामी हैं। उन भूमिस्वामी परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९३ –

ॐ गोप्त्रे नमः

माया से आच्छादित परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Veiled by His Maaya.

स्वमायया स्वमात्मानं संवृणोति इति गोप्ता अर्थात् अपनी माया से अपने को ढक लेते हैं, इसलिए गोप्ता हैं। परमात्मा की मायाशक्ति अत्यन्त प्रबल है। माया से उत्पन्न जगत के नामरूप से जीव अत्यन्त मोहित हो जाता है, जिसकी वजह से परमात्मा सर्वत्र तथा अपनी आत्मा की तरह से हृदय में स्थित होते हुए भी वे अनुभव में नहीं आते हैं। मानों कि वे माया से ढके हुए हैं। अतः वे गोप्ता कहे जाते हैं।

उन गोप्ता रूप परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९४ –

ॐ वृषभाक्षाय नमः

धर्ममय दृष्टिवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is

Perpetual Seer of Rightousness.

वृषभो धर्मः स एव वा दृष्टिः अस्य इति वृषभाक्षः अर्थात् वृषभ धर्म को कहते हैं और वही उनकी दृष्टि है, इसलिए वे वृषभाक्ष हैं। भगवान की दृष्टि धर्ममय है। वे धर्म और अधर्म को स्पष्टरूप से जानकर धर्ममार्ग के अनुसारी का कल्याण करते हैं तथा अधर्मी को दण्डित करते हैं। इसलिए वे धर्ममय दृष्टि से युक्त हैं। उन धर्ममय दृष्टिवाले परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९५ –

ॐ वृषप्रियाय नमः

धर्मप्रेमी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who Delights in Dharma.

वृषः धर्मः प्रियो यस्य स वृषप्रियः अर्थात् जिन्हें वृष अर्थात् धर्म प्रिय हैं, वे भगवान् वृषप्रिय हैं। भगवान को धर्म अत्यन्त प्रिय है। जब जब सृष्टि में धर्म की हानि और अधर्म की वृद्धि होती है, तब परमात्मा स्वयं ही धर्म की रक्षा करने हेतु अवतरित होकर धर्म की स्थापना करते हैं। यह ही उनकी धर्मप्रियता का प्रमाण है।

उन धर्मप्रिय परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९६ –

ॐ अनिवर्तिने नमः

धर्मरक्षा हेतु दृढ़संकल्प परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Steadfast.

देवासुरसंग्रामात् न निवर्तते इति अनिवर्ती: वृषप्रियत्वात् अर्थात् धर्मप्रेमी होने के कारण दैवासुर संग्राम से पीछे नहीं हटते हैं, इसलिए अनिवर्ती हैं। देवता और असुर धर्म और अधर्म के प्रतीक रूप हैं। जब जब धर्म के प्रतिनिधि रूप देवता और अधर्म के प्रतिनिधि रूप असुरों का युद्ध होता है, तो भगवान धर्म के प्रतिनिधि रूप देवता की रक्षा करने हेतु अवश्य उपस्थित रहते हैं। इसलिए वे अनिवर्ती हैं। उन अनिवर्ती परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ५९७ –

ॐ निवृत्तात्मने नमः

विषयों से निवृत्त परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Restrained Self.

स्वभावतो विषयेभ्यो निवृत्त आत्मा मनो अस्य इति निवृत्तात्मा अर्थात् भगवान की आत्मा यानी मन स्वभाव से ही विषयों से निवृत्त है, इसलिए वे निवृत्तात्मा हैं। भगवान अपने स्वस्वरूप के तथा जगत के मिथ्यात्व के ज्ञान से युक्त हैं। इसलिए अपने आपमें धन्य और कृतार्थ होने से तथा विषयों के मिथ्यात्व को जानने की वजह से स्वभाव से ही विषयों से भ्रमित नहीं होते हैं। इसलिए उन्हें निवृत्तात्मा कहते हैं। उन निवृत्तात्मा परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५९८ -

ॐ संक्षेप्त्रे नमः

जगत को बीजावस्था में विलीन करनेवाले परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who dissolves the world.

विस्तृतं जगत् संहारसमये सूक्ष्मरूपेण संक्षिपन् संक्षेप्ता अर्थात् संहार के समय विस्तृत जगत को सूक्ष्मरूप से संक्षिप्त करते हैं, इसलिए संक्षेप्ता हैं। प्रलय के समय यह सम्पूर्ण विस्तृत जगत माया रूप बीज अवस्था में विलीन हो जाता है। इस प्रकार परमात्मा ही अपने संकल्प से जगत को सूक्ष्मरूप में समेट लेते हैं, इसलिए वे संक्षेप्ता कहलाते हैं।

उन संक्षेप्ता परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

- ५९९ -

ॐ क्षेमकृते नमः

क्षेमकृत् परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is the Benefactor.

उपात्तस्य परिरक्षणं करोति इति क्षेमकृत् अर्थात् प्राप्त हुए पदार्थ की रक्षा करते हैं, इसलिए क्षेमकृत् हैं। भगवान का यह वचन है कि 'हमारे अनन्य भक्त के योग और क्षेम का मैं वहन करता हूं।' जीवनदाता स्वयं भगवान ही हैं। इसलिए हमें अपने जीवन की चिन्ता करना अनावश्यक है। भक्त भगवान के प्रति श्रद्धा और भक्ति से युक्त होकर अपने धर्म का पालन करता है, भगवान स्वयं उनके योग-क्षेम की रक्षा करते है। उन क्षेमकृत परमात्मा को सादर नमन।

ॐ

श्री विष्णु सहस्र नाम

भगवान विष्णु के हजार नामों की व्याख्या

– ६०० –

ॐ शिवाय नमः

कल्याणकारी परमात्मा को नमस्कार।

I salute the one who is Auspicious.

स्वनामस्मृतिमात्रेण पावयन् शिवः अर्थात् अपने नामस्मरणमात्र से पवित्र करने के कारण शिव हैं। भक्तिपूर्वक जिनके नाम का किया हुआ स्मरणमात्र भी कल्याणकारी होता है, उन स्वयं परमात्मा के बारे में तो क्या कहा जा सकता है! वे स्वयं शिवस्वरूप ही होने चाहिए।

उन कल्याणकारी अर्थात् शिवस्वरूप परमात्मा को सादर नमन।